Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 19th April 2019, Revised on 24th April 2019; Accepted 29th April 2019

आलेख

शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों के अभिमत का अध्ययन

* **डॉ. रचना राठौड़**
सह–आचार्य (शिक्षा)
लो.मा.ति.शि.प्र.म. (सी.टी.ई.) डबोक
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड–टू–बी विश्वविद्यालय), उदयपुर (राज.)
Email – drrathorerachna@gmail.com, Mob.-9414472016

मुख्य शब्द - *तनाव, चिंता, अन्तरद्वन्द्व आदि.*

1.1 प्रस्तावना

"Since wars begin in the minds of men it is in the minds of men that the defence of peace must be constructed."

- Constitution UNESCO

आज संसार में विज्ञान व तकनीकी के बल पर नये–नये आविष्कारों के कारण मानव जीवन समृद्ध हुआ वहीं विनाशक हथियारों, औद्योगिकरण के कारण मानव जीवन में तनाव, चिंता, अन्तरद्वन्द्वों में बेहताशा वृद्धि की है। मानव अपने परिवार, समाज से दिन–प्रतिदिन दूर होकर मशीनी यंत्र बनता जा रहा है। उसमें मानवीयता, सहयोग, मित्रता, परोपकारिता, बंधुत्व की भावना में कमी होती जा रही है। इन सभी गुणों को प्राप्त करने के लिए शिक्षा ही वह साधन है, जो मनुष्यों को उच्चतम स्तर पर विकास कर सुव्यवस्थित योग्यतम व्यक्ति का भावी व वर्तमान समस्याओं का सामना करने के रुप में निर्माण कर सकती है जिससे बालकों में प्राथमिक स्तर में शान्ति शिक्षा व्यवहारिक व सैद्धांतिक रुप से देकर श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण किया जा सके।

दुनिया को शान्ति से ही शक्ति दी जा सकती है। शान्ति का अर्थ यह नहीं कि शोर–शराबा न हो, दिक्कतें न हो और सब कुछ अच्छा ही अच्छा हो। शान्ति का असली मतलब है, तमाम ऐसी परिस्थितियों के बीच भी दिल में स्थिरता और सहजता होना क्योंकि असली शान्ति तो हमारे भीतर है।

यूनेस्को (1995) ने 21वीं सदी की आधारभूत चुनौती के रुप में असभ्य व हिंसात्मक संस्कृतियों को सभ्य व शान्तिप्रिय संस्कृतियों के रुप में बदलना स्वीकार किया है। शान्तिप्रिय एवं स्थिर संस्कृति को एक सीखती हुई या विकसित होती हुई ऐसी संस्कृति के रुप में परिभाषित किया जा सकता है। जिसका संबंध व्यक्तिगत, राजनीतिक तथा वैश्विक अहिंसात्मक परिवर्तनों के विकास से होगा।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार, ''शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा तीनों के स्वाभाविक सामंजस्य के निर्वाह से ही व्यक्ति और राष्ट्र खुश हो सकते हैं।''

आज के युग में आध्यात्मिक मूल्यों के स्थान पर मस्तिष्क की उपलब्धियों पर बल देने के कारण हम दुखी व भयभीत है। इस भय व दुखों से मुक्ति के लिए शान्ति शिक्षा की आवश्यकता बढ़ती जा रही है।

डॉ. मर्सी अब्राहम के अनुसार, ''शान्ति शिक्षा शान्तिप्रिय लोगों के लिए शिक्षा है जो कि इस पृथ्वी पर शान्ति काम करने के योग्य होंगे। यह विशेषतः भावनात्मक शिक्षा है। यह धार्मिक शिक्षा है। साथ ही यह स्वयं में शिक्षा है।''

अतः मानव को देवस्वरुप बनाने के लिए शिक्षा के नकारात्मक स्वरुप को स्वीकार न कर शिक्षा को मानव के सहयोग सहित मानवीय गुणों को उच्चतर रुप प्रदान कर शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व की सहभागिता के साथ शान्ति शिक्षा को जीवन के प्रत्येक स्तर पर लागू करें।

1.2 शान्ति का अर्थ

शान्ति सामान्यतः हिंसा की अनुपस्थिति को समझा जाता है लेकिन यह नकारात्मक अर्थ है। सकारात्मक रुप में अच्छे विचारों, कार्यों या दृष्टिकोणों, सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता व मानव अधिकारों का होना जिसमें बिना किसी रूकावट के अपने कार्यों को सफलतापूर्वक कर सके।

शान्ति के शाब्दिक अर्थ के रुप में शान्ति शब्द संस्कृत के 'शम' धातु से बना है जिसका अर्थ है – शमन करना अर्थात् बुरा प्रभाव हटाना और सुख कल्याण की प्राप्ति करना। वेदों व उपनिषदों में शान्ति शब्द विभिन्न स्थलों पर विभिन्न प्रसंगों के रुप में सकारात्मक अर्थों के रुप में उपयोग किया जाता रहा है।

लघु ऑक्सफोर्ड शब्दकोश (ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, 2001, पृ. 616) के अनुसार शान्ति को विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया गया है–

1. शत्रुता, घृणा व विरोध की दुनिया से मुक्ति।
2. युद्ध की समाप्ति, जो किसी भी रुप में हो।
3. जन क्रान्ति या उपद्रव से मुक्ति यानि जनता की पूर्ण सुरक्षा।
4. विघ्न व क्षोभ से मुक्ति।

अतः शान्ति मानव मस्तिष्क व समाज का अहिंसात्मक व सृजनात्मक द्वन्द्व का रुपान्तरण है। शान्ति की सकारात्मक व्याख्या में प्रसन्नता, स्वास्थ्य, संतोष, अच्छी आर्थिक स्थिति, सामाजिक न्याय, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता आदि है। इस सकारात्मक शान्ति को ही वास्तविक शान्ति कह सकते हैं।

शान्ति शिक्षा के संबंधित घटक

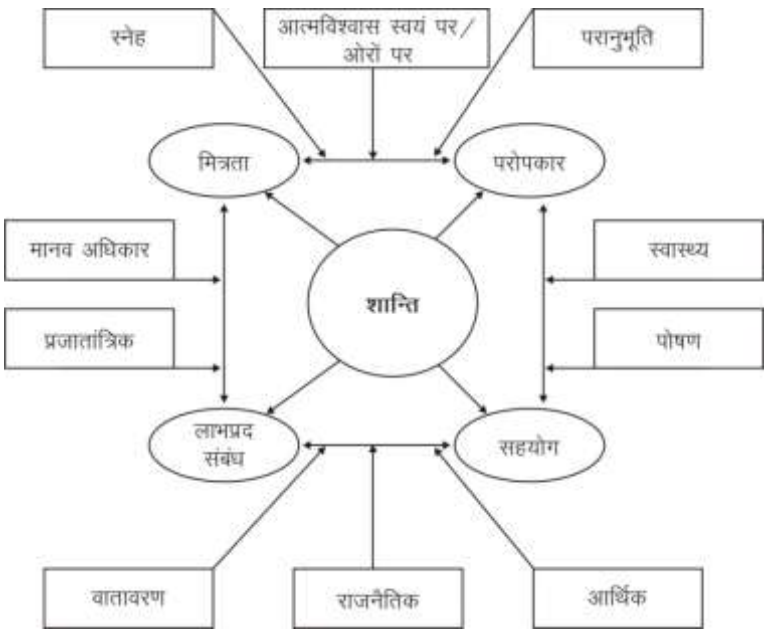

1.3 शान्ति के स्रोत

शान्ति स्थापित करने के बहुत से स्रोत है लेकिन यूनेस्को के प्रतिवेदन लर्निंग दी वे ऑफ पीस (2001, पृ. 9–11) में अर्थशास्त्र के रुप में गरीबी को दूर करके, राजनीति के रुप में लोकतंत्र की स्थापना करके, युद्धों को रोककर, कानून के रुप में कानून का शासन स्थापित करके व सामाजिक जागरूकता के रुप में सामान्यतः शान्ति स्थापित हो सकती है लेकिन स्थाई रुप से शान्ति स्थापना के तीन प्रमुख स्रोत है–

(1) आंतरिक शान्ति (2) सामाजिक शान्ति (3) प्राकृतिक शान्ति

''शान्ति वह व्यवहार है जो लोगों के आपसी बातचीत करने, सुनने एवं अंतःक्रिया करने के सुसंगत तरीकों से बढ़ता है और दूसरों को आघात पहुँचाने, चोटिल करने या नष्ट करने के तरीकों को हतोत्साहित करता है।''

– टैरेसा एम. बे. एण्ड ग्वेडेलोन वाई. नर्टर (1995)

(1) आंतरिक शान्ति स्रोत

इसमें मानव की आंतरिक भावनाएँ होती है जो शान्ति के लिए प्रेरित करती है जो इस प्रकार है– अच्छा स्वास्थ्य, अन्तर्द्वन्द्व की अनुपस्थिति, खुशी, स्वतंत्रता की भावना, अन्तर्दृष्टि, आध्यात्मिक शान्ति, दयालुता की भावना, सहानुभूति और कला की प्रशंसा व इन सभी का समायोजन आदि आते है।

(2) सामाजिक शान्ति स्रोत

इसमें समाज के विभिन्न स्तरों के बीच होने वाली शान्ति से है। इसमें मानव व मानव के बीच शान्ति, मानवीय संबंधों के विभिन्न स्तरों पर शान्ति, आपसी समझौता, प्रेम, मित्रता, एकता, आपसी समझ, स्वीकृति, सहयोग, भ्रातृत्व, विभिन्नताओं में एकता, लोकतंत्र, सामुदायिक निर्माण, मानवीय अधिकार और नैतिकता आदि है।

(3) प्राकृतिक शान्ति स्रोत

इसमें मनुष्य द्वारा निर्मित वातावरण न होकर प्रकृति द्वारा होता है। इसमें प्राकृतिक वातावरण व पृथ्वी के साथ सामंजस्य से ही शान्ति की प्राप्ति की जा सकती है।

अतः आंतरिक, सामाजिक व प्राकृतिक शान्ति स्रोतों से ही पूर्ण शान्ति की प्राप्ति की जा सकती है।

1.4 शान्ति शिक्षा का अर्थ

शान्ति शिक्षा को सांस्कृतिक व धार्मिक मूल्यों के साथ जोड़कर देखा जाता है। यह एक अनुशासनात्मक शिक्षा है जिसका संबंध शान्ति विचारों, शान्ति के ज्ञान व शान्ति के क्रियाकलापों से संबंधित है। यह अन्याय व विनाश के कारण पैदा होने वाले अन्तर्द्वन्द्वों की ऊपज है जिसमें समाज की विशुद्ध प्रकृति का अध्ययन करती है जो समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके।

"*A peace education is an attempt to respond to problems of conflict and violence on scales randing from the global and national to the local and personal. It is about exploring ways of creating more just and sustainable futures.*"

- **R.D. Laing (1978)**

के. एस. बासवराज के अनुसार, ''शान्ति शिक्षा एक कार्यक्रम एवं प्रक्रिया है जिसमें लोगों (नवयुवक एवं प्रौढ़ों) में शान्ति के मूल्य की सराहना तथा समझदारी की भावना का विकास किया जाता है। यह वह तैयारी है जिससे सामुदायिक जीवन को न्यायप्रिय, व्यवस्थित तथा सामंजस्यपूर्ण बनाया जाता है।''

अतः शान्ति शिक्षा हम सभी में उस साहस का संचार करती है, जिससे आक्रमण या हिंसा के पोषित सामाजिक मानकों को चुनौती दे सके। यह दीर्घकालीन सक्रिय शिक्षा है जो जीवन में आने वाले द्वन्द्वों का सामना करने के लिए ज्ञान व कौशलों का विकास करती है।

1.5 शान्ति शिक्षा की आवश्यकता

वर्तमान समाज, परिवार, समुदाय व राष्ट्र में प्रत्येक मानव तनाव, द्वन्द्व, हिंसा, भय से ग्रसित है। इन सबसे मुक्ति के लिए शान्ति शिक्षा की आवश्यकता महसूस हुई है। इसके अलावा भी कुछ प्रमुख बिंदु है–

(1) शान्तिपूर्ण नागरिकों के जीवन के लिए।

(2) मनुष्यों के आपसी सहयोग के निर्माण के लिए।

(3) मानव जाति को खुशहाल व सफल भविष्य के निर्माण के लिए।

(4) विद्यालयों में द्वन्द्वमुक्त वातावरण निर्माण के लिए।

(5) सामाजिक न्याय के लिए।

(6) शिक्षकों में शैक्षिक व्यवसाय के प्रति भावना के लिए।

(7) पारिवारिक विघटन व मतभेदों के बचाव के लिए।

अतः शान्ति शिक्षा को केवल सैद्धान्तिक रुप में ही न देकर व्यावहारिक रुप में भी जीवन के प्रत्येक स्तर पर देने की आवश्यकता है।

2. समस्या कथन

शोधकर्त्री ने शोध समस्या के रुप में निम्न समस्या का चयन किया है–

"शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों के अभिमत का अध्ययन।"

3. अध्ययन के उद्देश्य

शोध समस्या के निम्न उद्देश्य निर्धारित है–

1. शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों (भावी शिक्षकों) का अभिमत ज्ञात करना।
2. शान्ति शिक्षा के प्रति अध्यापक शिक्षकों का अभिमत ज्ञात करना।
3. शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं के अभिमत का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. शान्ति शिक्षा के प्रति अध्यापक शिक्षकों व अध्यापक शिक्षिकाओं के अभिमत का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. शान्ति शिक्षा के प्रति कला वर्ग व विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापकों के अभिमत का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. समस्या का परिकल्पना

शोध समस्या की परिकल्पनाएँ निम्न है–

1. शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं के अभिमत में सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. शान्ति शिक्षा के प्रति अध्यापक शिक्षकों व अध्यापक शिक्षिकाओं के अभिमत में सार्थक अंतर नहीं होता है।
3. शान्ति शिक्षा के प्रति कला वर्ग व विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापकों के अभिमत में सार्थक अंतर नहीं होता है।

5. मुख्य निष्कर्ष

शिक्षक महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों का शान्ति शिक्षा के प्रति अभिमत जानने हेतु संकलित तथ्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया, जिनमें निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. उद्देश्य क्षेत्र में शिक्षक महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों (भावी शिक्षकों) का शान्ति शिक्षा के प्रति अभिमत सकारात्मक है।
2. पाठ्यक्रम क्षेत्र में शिक्षक महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों (भावी शिक्षकों) का शान्ति शिक्षा के प्रति अभिमत सकारात्मक है।
3. शिक्षण विधियाँ क्षेत्र में शिक्षक महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों का शान्ति शिक्षा के प्रति अभिमत सकारात्मक है।
4. शिक्षक की भूमिका क्षेत्र में शिक्षक महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों का शान्ति शिक्षा के प्रति अभिमत सकारात्मक है।
5. विद्यालय वातावरण क्षेत्र में शिक्षक महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों (भावी शिक्षकों) का शान्ति शिक्षा के प्रति अभिमत सकारात्मक है।
6. समग्र क्षेत्र में शिक्षक महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों (भावी शिक्षकों) का शान्ति शिक्षा के प्रति अभिमत उच्च सकारात्मक है।
7. उद्देश्य क्षेत्र में शिक्षक महाविद्यालयों के अध्यापक शिक्षकों का शान्ति शिक्षा के प्रति अभिमत सकारात्मक है।
8. पाठ्यक्रम क्षेत्र में शिक्षक महाविद्यालयों के अध्यापक शिक्षकों का शान्ति शिक्षा के प्रति अभिमत सकारात्मक है।
9. शिक्षण विधियाँ क्षेत्र में शिक्षक महाविद्यालयों के अध्यापक शिक्षकों का शान्ति शिक्षा के प्रति अभिमत सकारात्मक है।
10. शिक्षक की भूमिका क्षेत्र में शिक्षक महाविद्यालयों के अध्यापक शिक्षकों का शान्ति शिक्षा के प्रति अभिमत सकारात्मक है।
11. विद्यालय वातावरण क्षेत्र में शिक्षक महाविद्यालयों के अध्यापक शिक्षकों का शान्ति शिक्षा के प्रति अभिमत सकारात्मक है।
12. समग्र क्षेत्र में शिक्षक महाविद्यालयों के अध्यापक शिक्षकों का शान्ति शिक्षा के प्रति अभिमत उच्च सकारात्मक है।
13. उद्देश्य क्षेत्र के आधार पर शिक्षक महाविद्यालयों में शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों एव छात्राध्यापिकाओं के अभिमत एक–दूसरे से भिन्न सकारात्मक हैं एवं उद्देश्य क्षेत्र में शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापिकाओं का अभिमत ज्यादा सकारात्मक है।

14. पाठ्यक्रम क्षेत्र के आधार पर शिक्षक महाविद्यालयों में शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों एव छात्राध्यापिकाओं के अभिमत भिन्न है एवं पाठ्यक्रम क्षेत्र में शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापिकों का अभिमत ज्यादा सकारात्मक है।

15. शिक्षण विधियाँ क्षेत्र के आधार पर शिक्षक महाविद्यालयों में शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों एव छात्राध्यापिकाओं के अभिमत एक–दूसरे से भिन्न हैं एवं शिक्षण विधियाँ क्षेत्र में शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापिकाओं का अभिमत ज्यादा सकारात्मक है।

16. शिक्षक की भूमिका क्षेत्र के आधार पर शिक्षक महाविद्यालयों में शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों एव छात्राध्यापिकाओं के अभिमत एक–दूसरे से भिन्न हैं एवं इस क्षेत्र में शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों का अभिमत ज्यादा सकारात्मक है।

17. विद्यालय वातावरण क्षेत्र के आधार पर शिक्षक महाविद्यालयों में शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों एव छात्राध्यापिकाओं के अभिमत एक–दूसरे से भिन्न हैं एवं इस क्षेत्र में शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों का अभिमत ज्यादा सकारात्मक है।

18. समग्र क्षेत्र के आधार पर शिक्षक महाविद्यालयों में शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों एव छात्राध्यापिकाओं के अभिमत एक–दूसरे से भिन्न नहीं हैं एवं समग्र क्षेत्र में शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों का अभिमत ज्यादा सकारात्मक है।

19. समग्र क्षेत्र के आधार पर विज्ञान व कला वर्ग में शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों के अभिमत एक–दूसरें से भिन्न हैं एवं समग्र क्षेत्र में कला वर्ग में शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों का अभिमत ज्यादा सकारात्मक है।

20. समग्र क्षेत्र के आधार पर विज्ञान व कला वर्ग में शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापिकाओं के अभिमत एक–दूसरे से भिन्न हैं एवं समग्र क्षेत्र में कला वर्ग में शान्ति शिक्षा के प्रति छात्राध्यापिकाओं का अभिमत ज्यादा सकारात्मक है।

21. उद्देश्य क्षेत्र के आधार पर शिक्षक महाविद्यालयों में शान्ति शिक्षा के प्रति अध्यापक शिक्षकों एवं अध्यापक शिक्षिकाओं के अभिमत एक–दूसरे से भिन्न सकारात्मक हैं एवं इस क्षेत्र में शान्ति शिक्षा के प्रति अध्यापक शिक्षकों का अभिमत ज्यादा सकारात्मक है।

22. पाठ्यक्रम क्षेत्र के आधार पर शिक्षक महाविद्यालयों में शान्ति शिक्षा के प्रति अध्यापक शिक्षकों एवं अध्यापक शिक्षिकाओं के अभिमत एक–दूसरे से भिन्न नहीं है एवं पाठ्यक्रम क्षेत्र में शान्ति शिक्षा के प्रति अध्यापक शिक्षिकाओं का अभिमत ज्यादा सकारात्मक है।

23. शिक्षण विधियाँ क्षेत्र के आधार पर शिक्षक महाविद्यालयों में शान्ति शिक्षा के प्रति अध्यापक शिक्षकों एवं अध्यापक शिक्षिकाओं के अभिमत एक–दूसरे से भिन्न नहीं हैं एवं शिक्षण विधियाँ क्षेत्र में शान्ति शिक्षा के प्रति अध्यापक शिक्षिकाओं का अभिमत ज्यादा सकारात्मक है।

24. शिक्षक की भूमिका क्षेत्र के आधार पर शिक्षक महाविद्यालयों में शान्ति शिक्षा के प्रति अध्यापक शिक्षकों एवं अध्यापक शिक्षिकाओं के अभिमत एक–दूसरे से भिन्न हैं एवं इस क्षेत्र में शान्ति शिक्षा के प्रति अध्यापक शिक्षकों का अभिमत ज्यादा सकारात्मक है।

25. विद्यालय वातावरण क्षेत्र के आधार पर शिक्षक महाविद्यालयों में शान्ति शिक्षा के प्रति अध्यापक शिक्षकों एवं अध्यापक शिक्षिकाओं के अभिमत एक–दूसरे से भिन्न नहीं हैं एवं इस क्षेत्र में शान्ति शिक्षा के प्रति अध्यापक शिक्षकों का अभिमत ज्यादा सकारात्मक है।

26. समग्र क्षेत्र के आधार पर शिक्षक महाविद्यालयों में शान्ति शिक्षा के प्रति अध्यापक शिक्षकों एवं अध्यापक शिक्षिकाओं के अभिमत एक–दूसरे से भिन्न नहीं हैं एवं समग्र क्षेत्र में शान्ति शिक्षा के प्रति अध्यापक शिक्षकों का अभिमत ज्यादा सकारात्मक है।

6. सुझाव

1. बालकों को शान्तिपूर्ण जीवनयापन के लिए पुस्तकालयों व शान्ति शिक्षा से संबंधित सेमिनार, संगोष्ठियों में हिस्सा लेना चाहिए।
2. शान्ति शिक्षा पर शिक्षकों के अभिमत के अनुसार विद्यालय से पारिवारिक जीवन के प्रत्येक स्तर पर बालक के जीवन में शान्ति शिक्षा को व्यावहारिक रुप से लागू करना चाहिए।
3. विद्यालयों में शान्ति शिक्षा प्रार्थना सभाओं में महापुरुषों की जीवनी पर कहानियाँ, मित्रता, सहयोग आदि पर कहानियाँ, नाटकों से बालकों के चरित्र का विकास कर सकते हैं।
4. शिक्षकों को अपना स्वयं का मूल्यांकन करके अपेक्षित सुधार द्वारा उत्तम चारित्रिक व्यवहार प्रस्तुत करना चाहिए जिससे छात्र व्यवहार का अनुकरण कर ईमानदार व परिश्रमी बन सके।
5. विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापक व छात्राध्यापिकाओं में शान्ति शिक्षा से संबंधित जानकारी का अभाव है तथा इसे बढ़ाने के लिए विभिन्न गतिविधियाँ करवाई जानी चाहिए।
6. प्रेम व स्नेह से किसी के व्यवहार को बदला जा सकता है व अपने कर्त्तव्यों का पालन करके ही अधिकारों को प्राप्त किया जा सकता है।
7. शान्ति शिक्षा विद्यालय के सभी स्तरों पर वर्तमान विषयों में सम्मिलित कर या अलग विषय में दी जानी चाहिए।
8. शान्ति शिक्षा के निर्माण में अध्यापकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्यालय में अधिक से अधिक पाठ्य–सहगामी व सामुहिक कार्यक्रमों से आपसी स्नेह की भावना बढ़ती है।
9. सृजनशील कार्यक्रमों से आत्म–संतुष्टि मिलने से बालकों में अहिंसक प्रवृत्तियों का विकास कर सकेंगे।
10. बालकों में नैतिक मूल्यों का विकास शान्ति के मूल तत्वों से ही किया जा सकता है। इसके लिए विद्यालय प्रशासन को उचित आचार संहिता का निर्माण करना चाहिए व इसका पालन सुनिश्चित करना चाहिए।

उपर्युक्त सुझावों की क्रियान्विति करने से शान्ति शिक्षा का उचित प्रसार एवं प्रचार किया जा सकता है। इस उद्देश्य से प्रस्तुत अध्ययन शान्ति शिक्षा को प्रत्येक स्तर पर लागू कर समाज में शान्ति की स्थापना हो सकेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रतुड़ी वीरेन्द्र मोहन (1971) : शान्ति दूत नेहरू उमेश प्रकाशक, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली
2. राय पारसनाथ (1985) : ''अनुसंधान परिचय''
3. श्रीवास्तव, डी. एन. (2000) : ''अनुसंधान विधियाँ'' साहित्य प्रकाशन, आगरा
4. पी.डी. पाठक (1974) : ''भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ'', पृ. सं. 342, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–1
5. जनरल ऑफ इंडियन एजुकेशन (नवम्बर, 2014)
6. दुबे, सत्य मिश्र, शर्मा, दिनेश : ''समाजशास्त्र एक परिचय'' राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद पब्लिकेशर्स
7. मिश्रा, गार्गीशरण मराल (2003) : ''शिक्षा की समस्याएँ और समाधान'' विकास प्रकाशन, कानपुर
8. सच्चिदानंद ढोंढियाल एवं अरविन्द फाटक (1982) : द्वितीय संस्करण ''शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र'' राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
9. डॉ. एन. नागराजन : ''दी एज्युकेशनल रिव्यू'' वॉल्यूम 107 (2001)
10. डॉ. शिवपाल सिंह : ''शांति के लिए शिक्षा''

**** Corresponding Author:***

डॉ. रचना राठौड़, *सह–आचार्य (शिक्षा)*

लो.मा.ति.शि.प्र.म. (सी.टी.ई.) डबोक, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी विश्वविद्यालय), उदयपुर (राज.)

Email – drrathorerachna@gmail.com, Mob.-9414472016